दक्षिण यमन से भारतीय मूल के व्यक्तियों का संप्रत्यावर्तन

*73. **श्री रामचन्द्र विकल :**

श्री रामचन्द्र भारद्वाज :

क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत सरकार ने दक्षिण यमन में फंसे भारतीय मूल के व्यक्तियों को स्वदेश वापस बुलाने के लिये अब तक क्या कार्यवाही की है ;

(ख) क्या दक्षिण यमन में हाल में हुए दंगों के दौरान वहां पर स्थित भारत के राजदूत के आवास की तलाशी ली गई थी तथा इन दंगों में बहुत से भारतीय मारे गये थे; और

(ग) यदि हां, तो इन घटनाओं का ब्यौरा क्या है ?

विदेश मंत्री (श्री बली राम भगत): (क) से (ग) यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य में अन्दरूनी उपद्रव 13 जनवरी, 1986 की सुबह शुरू हुए थे । यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य तथा बाहरी विश्व के बीच 13 से 27 जनवरी, 1986 तक संचार की सभी सामान्य व्यवस्थाएं बिल्कुल ठप्प पड़ी रही । हालांकि यह लड़ाई पूर्णरूप से यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य का अन्दरूनी मामला था, फिर भी, इससे 3,000 भारतीय राष्ट्रिकों सहित उस देश में मौजूद बड़ी संख्या में विदेशी राष्ट्रिक प्रभावित हुए थे ।

सोवियत और ब्रिटिश सरकारों के पास उपलब्ध संचार व्यवस्थाओं के जरिए अदन में अपने दूतावास के साथ संपर्क करने के हमने सभी संभव प्रयास किए । अदन के आसपास उनके जो जहाज मौजूद थे, वे विदेशी राष्ट्रिकों को अदन से बाहर निकालने में मदद कर रहे थे और हमारे अनुरोध पर वे भारतीय राष्ट्रिकों को भी वहां से निकालने के लिए राजी हो गए। तदनुसार 17 से 24 जनवरी के बीच इन जहाजों पर लगभग 425 भारतीय राष्ट्रिकों को अदन से जिबूती पहुंचाया गया । इसके साथ ही भारतीय जहाजरानी निगम को यह कहा गया कि वे अपने मालवाहक पोतों को फौरन जिबूती भेज दें। तदनुसार "विश्वधर्म" और "विश्व उमंग" नामक दो जहाज क्रमशः 31 जनवरी और 7 फरवरी को 69 और 63 भारतीय राष्ट्रिकों को बम्बई लाए । एयर इंडिया का एक विशेष चार्टर्ड विमान भी जिबूती भेजा गया और 27 जनवरी 1986 को इस जहाज द्वारा 44 भारतीय राष्ट्रिकों के साथ बंगलादेश और श्रीलंका के 110 राष्ट्रिकों को भी वहां से बाहर निकाला गया। इसके अतिरिक्त भी वाणिज्यिक विमानों से भारतीय राष्ट्रिकों को वहां से निकाला गया था जिसकी व्यवस्था उनके अपने-अपने नियोक्ताओं ने की ती ।

भारत सरकार ने जनवरी के अन्तिम सप्ताह में अदन के निकट भारतीय नौसेना का एक फ्रिगेट भी भेजा ताकि वह राष्ट्रिकों को वहां से बाहर निकालने की प्रक्रिया में मदद करने के लिए वहां उपलब्ध रह सके ।

अदन से जिबूती पहुंचने वाले लोगों से यह भी पता चला कि लगभग 800 भारतीय वहां से निकलने की प्रतीक्षा में हैं किन्तु स्थानीय प्राधिकारी नहीं चाहते कि वे लोग वहां से जाएं क्योंकि इस समय में उनकी सेवाएं अनिवार्य समझी जा रही हैं । दिल्ली में यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य के राजदूत से अनुरोध किया गया था कि मौजूदा जोखिम को देखते हुए वे तत्काल अपनी सरकार से, सम्पर्क करके यह देखें कि इन लोगों को वहां से जाने की अनुमति दी जाए । क्योंकि वे अपनी सरकार के साथ संपर्क करने में सफल नहीं हो पाए । हमने सोवियत सरकार से यह अनुरोध किया कि वे अदन स्थित हमारे मिशन और यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य की सरकार के साथ सम्पर्क करके हमारे राष्ट्रिकों को तत्काल वहां से बाहर निकलवाने में मदद करें। इस बीच हमने बराबर इस बात का इंतजाम रखा कि जब भी जरूरत हो अदन से हम अपने राष्ट्रिकों को ले जा सकें ।

29 जनवरी को अदन स्थित हमारे मिशन के साथ टेलेक्स संचार सम्पर्क पुनः कायम होने पर मिशन को यह कहा गया कि वह यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य के साथ विचार विमर्श करके भारतीय राष्ट्रिकों को वहां से बाहर निकालने के सभी स्थानीय प्रबन्धों को अंतिम रूप दे । तब तक स्थिति में सुधार होना शुरू हो गया था और वहां

में निकल आने के इच्छुक भारतीयों की संख्या में धीरे-धीरे कमी हो गई । फरवरी के प्रारंभ से अदन से हवाई जहाजों का आना-जाना शुरू हो गया । यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य में भारत के राजदूत श्री मैनर्स 7 फरवरी को जिबूती से अदन पहुंच गये । श्री मैनर्स 22 फरवरी को जिबूती पहुंच गये ताकि वहां पहुंचने वाले लोगों का इन्तजाम किया जा सके और वहां स्थित अवैतनिक प्रधान कौंसिल की सहायता से, और वहां रहने वाले अन्य भारतीयों की सहायता से, जिन्होंने मुसीबत में फंसे अपने साथी राष्ट्रिकों की सहायता के लिये उपलब्ध सभी संसाधन जुटाये, उन लोगों को भारत पहुंचाया जा सके ।

हमारे 11 राष्ट्रिकों के मारे जाने की खबर हमें तब मिली जब अदन से कुछ लोग जिबूती पहुंचे थे । जैसे ही अदन के साथ टेलेक्स सम्पर्क पुन: स्थापित हुआ तो हमने अपने मिशन से यह कहा कि वह इन खबरों की पुष्टि करे और यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य से इसका ब्यौरा हासिल करें । साथ-साथ ही दिल्ली में यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य के राजदूत से यह कहा गया कि वह मौत की खबरों के बारे में हमारी गम्भीर चिन्ता से तथा उस देश में रह रहे हमारे अन्य राष्ट्रिकों की सुरक्षा का आश्वासन दिए जाने के बारे में भी अपनी सरकार को अवगत कराएं । उनसे यह भी कहा गया कि वे उन सभी भारतीय राष्ट्रिकों को जो वहां से अविलम्ब बाहर जाना चाहते हैं, अनुमति दिए जाने की अपनी सरकार की स्वीकृति तत्काल हमें दें ।

मंत्रालय में खाड़ी मामलों की देखभाल करने वाले संयुक्त सचिव को 11 से 15 फरवरी तक पांच दिन की यात्रा पर अदन भेजा गया था ताकि वे स्थिति का मौके पर जायजा ले सकें। अदन में अपने प्रवास के दौरान संयुक्त सचिव ने भारतीय समुदाय के विभिन्न वर्गों के लोगों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की जिनमें मजदूर, डाक्टर, प्राध्यापक, नर्सें, आइटेक विशेषज्ञ तथा अन्य लोग शामिल थे । बहुत कम लोगों को छोड़कर उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि वे यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य में ही काम करते रहना चाहते हैं क्योंकि उनका विचार था कि जो होना था सो हो चुका है तथा स्थिति धीरे-धीरे सामान्य होती जा रही है । केवल 80 लोगों ने वहां से बाहर जाने की इच्छा व्यक्त की और अपने राजदूतावास से यह कहा गया कि वे इन लोगों के नियोक्ताओं के साथ परामर्श करके उन्हें शहर से बाहर निकालने की व्यवस्था करें ।

अब इस बात की पुष्टि हो गई है कि जो 11 भारतीय मारे गए थे वे अदन के निकट अपने शिविर स्थल में अपने मैस में थे । वे तब मारे गए थे जब 15 जनवरी को टैंक से गोलाबारी हुई । प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार उनके मृत शरीर क्षत-विक्षत हो गये थे और इस कदर जल गये थे कि उन्हें पहचानना नामुमकिन हो गया था । उनके मित्रों और स्थानीय प्राधिकारियों ने उनके अवशेषों को दफना दिया था क्योंकि उस भयानक लड़ाई में यह संभव नहीं था कि इन अवशेषों को संभाल कर रखा जा सकता या उन्हें उनके संबंधियों को भेजा जा सकता। चार अन्य मजदूर भी घायल हुए थे, उनमें से दो गम्भीर रूप से घायल हुए थे उन्हें चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई गई और यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य की सरकार उन्हें भारत वापस भेज रही है । इनके अतिरिक्त किसी अन्य भारतीय राष्ट्रिक के गम्भीर रूप से घायल होने की खबर वहीं मिली । वे सभी सुरक्षित बताए जाते हैं । यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य की सरकार के साथ हमने यह मामला उठाया है और वे मृतक भारतीयों के परिवारों को तथा घायलों को मुआवजा देने के लिए सहमत हो गए हैं ।

अदन में हमारे राजदूत के निवास को भी क्षति पहुंची है । यह खबर मिली थी कि 16 जनवरी को कुछ सैनिकों ने घर में घुसकर उनके नौकर पर गोलियां चलाईं जिसके कारण उसकी दायीं बांह जख्मी हो गई थी । ऐसा लगता है कि सैनिकों ने शहर में चल रही लड़ाई के दौरान इस भवन का अस्थायी तौर पर इस्तेमाल किया था । तथापि घर के साज सामान को कोई भारी क्षति नहीं पहुंची थी ।

इस लड़ाई के समुचित दौर में हालांकि बहुत से अन्य विदेशी राजदूतावास बंद हो गए थे तथा उनके कार्मिक शहर छोड़कर चले गए थे किन्तु हमारे राजदूतावास के कर्मचारी अपने-अपने स्थलों पर ही रहे और उनमें से कोई भी वहां से नहीं हटा। लड़ाई के दौरान उनके कार्य में भारी बाधा पहुंची थी और अन्य भारतीय राष्ट्रिकों की भांति इन्हें भी भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था।

सारी संचार व्यवस्था ठप्प पड़ जाने के कारण इस घमासान लड़ाई के समय हमारे अधिकारी और कर्मचारी बिना बिजली पानी के चांसरी में ही फंस गए और उनके परिवार अपने-अपने घरों में भारी शारीरिक और मानसिक कठिनाई में उन्होंने जिस साहस का परिचय, दिया वह सहरानीय है। यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य की सरकार ने भी इस बात की अत्यंत सराहना की है कि उपद्रवों के दौरान भारतीय डाक्टरों, नर्सों तथा अन्य लोगों ने समय पर अपनी सेवाएं उपलब्ध कीं। यमन लोकतांत्रिक जन गणराज्य की सरकार ने भारत सरकार से इस बात पर खेद प्रकट किया है कि उपद्रवों के दौरान भारतीय राष्ट्रिकों को भारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

पर्यावरणीय प्रदूषण रोकने के लिये विधान बनाया जाना

*74. **श्री राधाकिशन मालवीय :** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पर्यावरण के नियोजन तथा सुधार के लिये एक एकीकृत विधान बनाने का कोई प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है ; और

(ख) यदि हां, तो इस तरह का विधान संसद में कब तक पुर:स्थापित कर दिया जायेगा?

प्रधान मंत्री (श्री राजीव गांधी): (क) और (ख) जी, हां। औद्योगिक सुरक्षा एवं खतरे वाले पदार्थों के प्रबन्ध पर विधान, संसद के इसी सूत्र में पेश किया जायेगा।

Person arrested in Ram Swarop Spy Case

*75. SHRI F. M. KHAN: Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) what is the number of persons arrested in the Ram Swarup spy case recently on charges of selling national secrets to foreign agents;

(b) what are the details in this regard; and

(c) whether Government have conducted any C.B.I enquiry in this regard, if so, what is the outcome of the enquiry?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S. B. CHAVAN): (a) Two persons were arrested in this case.

(b) and (c) During the course of investigations by Delhi Police under FIR No. 216|85 dated 28.9.85 registered in the Tughlak Road Police Station, New Delhi ,Shri Ram Swarup Sabharwal and Shri Javed Siddiqui were arrested and have subsequntly been charge-sheeted on 24th January 1986 in the Court of the Additional Chief Metropolitan Magistrate for offences under sections 3, 5 and 9 of the Official Secrets Act, 1923, read with section 120(B) of the I.P.C. The matter is presently sub-judice.

Talks between India and Pakistan on Siachen Glacier

*76. SHRI KALPNATH RAI:
SHRI PYARELAL KHANDELWAL:

Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether any talks between India and Pakistan on the question of jurisdiction over the Siachen Glacier area with a view to finding a peaceful solution of the problem were held recently; and

(b) what was the stand of the Pakistan Government in this regard?